भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-४०, अक्टूबर-२०२४

क्यों कुंठित हो?

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-४०, अक्टूबर-२०२४

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८१, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-शरद

सोम		07 अश्विन शु. चतुर्थी	14 अश्विन शु. एकादशी, पापाकुंशा एकादशी व्रत	21 कार्तिक कृ. पंचमी	28 कार्तिक कृ. एकादशी, रमा एकादशी व्रत
मंगल	01 अश्विन कृ. चतुर्दशी, चतुर्दशी श्राद्ध	08 अश्विन शु. पंचमी	15 अश्विन शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	22 कार्तिक कृ. षष्ठी	29 कार्तिक कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, धनतेरस
बुध	02 अश्विन कृ. अमावस्या, श्राद्ध लाल बहादुर एवं गांधी जयंती	09 अश्विन शु. षष्ठी	16 अश्विन शु. चतुर्दशी/पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, कोजागर पूजा	23 कार्तिक कृ. सप्तमी	30 कार्तिक कृ. चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी, छोटी दीवाली
गुरू	03 अश्विन कृ. प्रतिपदा, नवरात्रि घटस्थापना, म. अग्रसेन जयंती	10 अश्विन शु. सप्तमी	17 अश्विन शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत	24 कार्तिक कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी, अहोई अष्टमी	31 कार्तिक कृ. चतुर्दशी, काली पूजा
शुक्र	04 अश्विन शु. द्वितीया	11 अश्विन शु. अष्टमी	18 कार्तिक कृ. प्रतिपदा	25 कार्तिक कृ. नवमी	
शनि	05 अश्विन शु. तृतीया	12 अश्विन शु. नवमी, विजया दशमी, दशहरा	19 कार्तिक कृ. द्वितीया	26 कार्तिक कृ. दशमी	
रवि	06 अश्विन शु. तृतीया	13 अश्विन शु. दशमी	20 कार्तिक कृ. तृतीया/चतुर्थी, करवा चौथ व्रत	27 कार्तिक कृ. एकादशी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

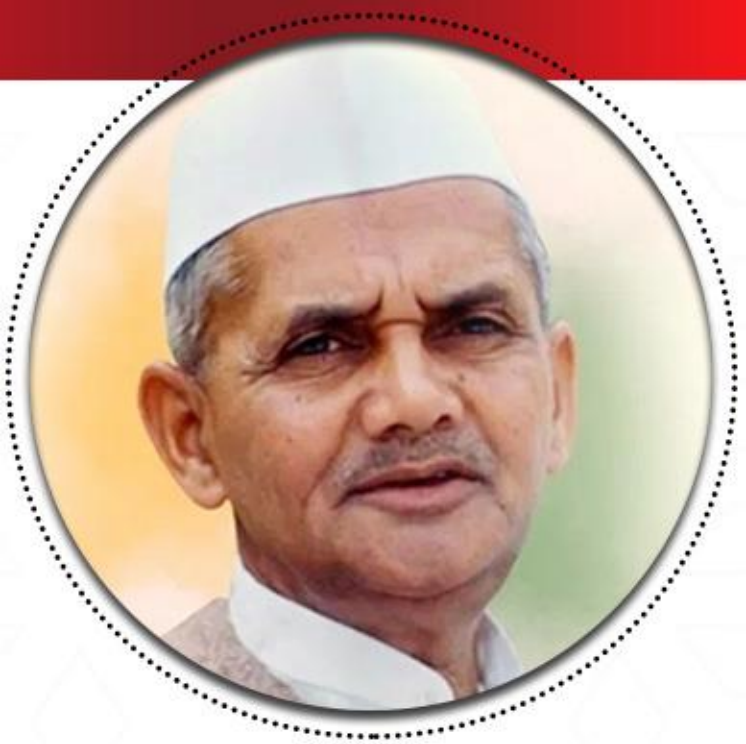

शास्त्रीजी की जिन्दगी से हमें बहुत कुछ सीखने मिलता है

अहिंसा के पुजारी एवं सादगी के प्रतिमूर्ति लाल बहादुर शास्त्री जी की जिन्दगी से हमें बहुत कुछ सीखने मिलता है। आप यह सभी जानते होंगे कि शास्त्रीजी ने एक बार गाँधीजी के लहजे में ही कहा भी था कि **"मेहनत प्रार्थना के ही समान है"** क्योंकि वे गाँधीजी को अपना गुरु मानते थे और उन्हीं से उन्होंने सादगी और देश के प्रति प्रतिबद्धता सीखी।

वैसे तो अनेकों ऐसे वाकये हैं जिससे हँसमुख स्वभाव वाले शास्त्रीजी की सादगी के अलावा कर्मठता, सरलता, स्पष्टवादिता, नियमबद्धता, दृढ़निश्चयता वगैरह स्पष्ट झलकती है। लेकिन अब मैं यहाँ एक ऐसा वाकया प्रस्तुत कर रह हूँ जिससे भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान रखने वाले शास्त्रीजी के हंसमुख स्वभाव, सरलता व स्पष्ट वादिता सभी एक साथ जानने को मिलेंगे।

वरिष्ठ लेखक, पत्रकार कुलदीप नैयर ने अपनी अंतिम किताब **'ऑन लीडर्स एंड आइकंस फ्रॉम जिन्ना टू मोदी'** में एक घटना का उल्लेख करते हुये लिखा है कि एक अवसर पर बहुत सारे अभिनेताओं के बीच प्रधानमन्त्री शास्त्रीजी के साथ वे भी मौजूद थे। उस अवसर पर विश्व भर में अपनी सुन्दरता के लिये मशहूर मीना कुमारी जिन्होंने हिंदी सिनेमा में हमेशा नाटकीय और दुखद भूमिकाएँ निभा अपनी एक अलग पहचान बना कर काफी मशहूर हो गयी थीं, ने प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्रीजी को फूलों की माला पहनायी। माला ग्रहण पश्चात बड़े ही धीमी आवाज में शास्त्रीजी ने कुलदीप नैयर से पूंछा कि ये महिला कौन है। यह सुन कुलदीप जी ने शास्त्रीजी की तरफ हैरानी से देखा। फिर बोले कि ये महिला मशहूर अभिनेत्री मीना कुमारी हैं। **शास्त्री जी फिर भी न समझ पाये कि ये महिला आखिर में कौन है।**

अन्त में शास्त्रीजी ने वहाँ उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए सार्वजनिक तौर पर अपनी स्पष्टवादिता आदत अनुसार मीना कुमारी जी की ओर मुखातिब हो माफी मांगते हुए बोल दिया कि – **"माफ़ करियेगा**

मीना कुमारी जी मैं आपको नहीं जानता"। मैनें आपका नाम पहली बार सुना है। शास्त्रीजी की यह बात सुन कर मीना जी के चेहरे पर शर्मिंदगी का भाव आ गया था।

सावर्जनिक तौर पर इस तरह माफी वाली घटना से यह स्पष्ट होता है कि सादगी पसन्द न्यायप्रिय शास्त्रीजी कितने सरल स्वभाव के साथ स्पष्टवादी थे।

उपरोक्त तरह के अनेक वाकये शास्त्रीजी की जिन्दगी में परिलक्षित हुए हैं जिसके द्वारा वे अपने सभी चाहने वालों को **"नि:स्वार्थ भाव से ज़िन्दगी में दिखावे से बचकर वो कार्य करना चाहिए जो असल में ज़रूरी है"** का सन्देश बड़े ही सही तरीके से दे गये। उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिये मरणोपरान्त भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

कन्याओं को पूजन से अधिक सुरक्षा की जरूरत है ...!

प्रकृति के खूबसूरत नजारों को अपनी आंखों में कैद करने का हक उनका भी है, वह भी खुली हवा की ताजगी रोम रोम में भरना चाहती है, पाखियों सी उड़कर गगन को छूना चाहती है, शिक्षा जगत में ऊंचाइयों का परचम लहराना चाहती हैं, बेटियों के परों में ताकत है अपने लक्ष्य तक पहुंचने की।

क्यों लग जाता है अंकुश उनके हसीन ख्वाबों पर ?

नवरात्रि का पर्व भारतभर में आस्था का दीप प्रज्वलित कर जाता है। घर-घर में पूजा अर्चना, धार्मिक अनुष्ठान होते है, **एक दिन कन्याओं को देवी स्वरूप मान पूजन कर हम अपने दायित्वों से मुक्त हो जाते है। यह देवी स्वरूप कन्यायें कभी गर्भ में कुचल दी जाती है, तो कभी कच्ची उम्र में ही खिलने से पूर्व कई बार रौंद दी जाती है, कभी तेजाब की आग में झुलस जाती है।**

क्या यह नन्हीं प्रतिमायें खंडित करने के लिए होती है?

देशभर में कन्याओं के साथ हो रहे अत्याचार को उनकी दर्दनाक करूण पुकार को भयवश और बदनामी के डर से अनसुना कर दिया जाता है और इसलिए समाज में विकृति भयानक रूप में फैल रही है क्योंकि यहां ज्यादातर गुनाह दर्ज ही नहीं होते है और **गुनहगार सरेआम इज्जत के साथ समाज में घूमते है उनके खिलाफ आवाज नहीं उठाई जाती** इसलिए उनका हौसला भी बढ़ जाता है।

वर्तमान युग यह स्पर्धा का युग है और इस स्पर्धा में शामिल होने का हक सभी को है। कन्यायें हर क्षेत्र में बढ़-चढ़ हिस्सा ले प्रगति के सोपान पर निरंतर आगे बढ़ना चाहती है किंतु इन सबके लिए घर की देहरी लांघ कर उसे बाहर निकलना अनिवार्य हो जाता है किंतु वह कहीं भी सुरक्षित नहीं यातायात के संसाधन हो अथवा क्रिडाजगत, कला जगत, शिक्षा जगत अनेक ऐसी जगहों पर कन्यायें अत्याचार का शिकार होती है यह मासूम कलियां पूरी तरह निर्दोष होती है किंतु दुर्भाग्यवश तमाम ऐसी घटनाएं होती है

जिस से इन्हें अपने लक्ष्य को तिलांजलि देनी पड़ती है और धीरे धीरे कर ऐसी अनगिनत प्रतिभायें पर्दे की आड़ में छिप जाती है और फिर हम अफसोस करते है हर क्षेत्र में पिछड़ने का, ऐसी घटनाएं सुरसा सा मुँह खोले आये दिन घटित हो रही है और इन घटनाओं से अनेक अभिभावक प्रभावित होते और दूषित समाज के चलते बेटियों के पैरों में बंदिशों की बेड़ियां डाल देते है। **शालाओं में आजकल "गुड टच बॅड टच" का अंतर सिखाया जाता है किंतु सोचनीय है की मासूम सी कली बॅड टच का विरोध करने में कैसे सक्षम होगी।**

गुनहगारों को कड़ी से कड़ी शिक्षा मिलेगी तभी समान प्रवृत्ति के लोगों तक वह बात पहुंच पायेगी और उनके मन में सजा का कुछ भय उत्पन्न होगा। बहुत से नाबालिग लड़कों को गुनहगार होते हुए भी नाबालिग होने के कारण सजा मुक्त कर दिया जाता हैं जो अनुचित है। माता पिता को तटस्थ होकर सच्चाई को उजागर करना होगा तभी **"सत्यमेव जयते"** का घोष सार्थक होगा और यहां **नन्हीं कलियां सफलता के शिखर पर पहुंच भारत देश को अपने ज्ञान प्रकाश से जगमग करने में सफल हो पायेंगी।**

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा

मां शैलीपुत्री के एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में कमल है और ये देवी वृषभ पर विराजमान हैं। उनका यह स्वरूप बेहद शुभ माना जाता है। **मां शैलपुत्री हिमालय की पुत्री है।** माता शांति और उत्साह देने वाली और भय को दूर करने वाली है।

नवरात्रि के दुसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा

मां ब्रह्मचारिणी के दाहिने हाथ में जप की माला व बाएं हाथ में कमंडल है। माता ज्योतिमय और आभामय से परिपूर्ण है जो दुष्टों को भी सही मार्ग दिखती है। मां से महादेव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तप किया था।

नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा

माता की पूजा करने से भक्तों में वीरता, निर्भयता और सौम्यता का विकास होता है। मां की मुद्रा युद्ध मुद्रा है। माता अपने मस्तक पर घंटे के आकार का चंद्रमा धारण किये हैं। माता को **स्वर की देवी** भी कहते है।

नवरात्रि के चौथे दिन मां कूष्माँडा की पूजा

माता को **"आदिशक्ति व आदिस्वरूपा"** भी कहते है। माता ने अपनी दिव्य मुस्कान से संसार का अँधेरा दूर किया था। सभी के दुःखों को हरने वाली माता का निवास स्थान सूर्य है। माता सिंह पर सवार है जो धर्म का प्रतिक माना जाता है।

नवरात्रि के छठे दिन मां कात्यायनी की पूजा

छठा स्वरूप मां कात्यायनी का है जो बृहस्पति ग्रह का संचालन करती है। मां की पूजा करने से मस्तिष्क, त्वचा, अस्थि और संक्रमण के रोगों में लाभ मिलता है। मां को हल्दी की गांठ चढ़ाने पर विवाह की बाधा दूर होती है।

नवरात्रि के सातवें दिन मां कालरात्री की पूजा

इनको शुभंकरी के नाम से भी जानते है। देवी कालरात्रि का स्वरूप अत्यंत भयंकर है, जो मधु कैटभ जैसे असुर और पापियों का नाश एवं दुष्टों का संहार के लिए है। तांत्रिक विद्या करने वालो के लिए भी आज का दिन शुभ माना जाता है।

नवरात्रि के आठवें दिन मां महागौरी की पूजा

आदिशक्ति मां दुर्गा का अष्टम स्वरूप श्री महागौरी है, मां का रंग अत्यंत गौरा है और इनकी उम्र 8 वर्ष की मानी गयी है। शुंभ निशुंभ से युद्ध में पराजित होने पर देवताओं ने गंगा नदी के तट पर माता से सुरक्षा की प्रार्थना की थी।

नवरात्रि के नवमें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा

मां सिद्धिदात्री अपने भक्तों को अनेक सिद्धियाँ, यश, बल और धन प्रदान करती है। रोग, भय एवं शोक से मुक्ति देती है। मां की पूजा मनुष्य के अलावा देव, ऋषि, यक्ष, गंधर्व, किन्नर और असुर भी करते है।

पूर्वी भारत में हुगली नदी के किनारे स्थित **कोलकाता (पूर्व नाम - कलकत्ता)** को भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। यह शहर अपनी भव्य औपनिवेशिक इमारतों, समृद्ध परंपराओं, सुंदर संगीत और कला के कारण एक अनोखा चरित्र रखता है। यहां रवींद्रनाथ टैगोर और सत्यजीत रे जैसे महान कलाकारों ने अपनी पहचान बनाई है, और यहां के लोग साहित्य और सिनेमा के गहरे पारखी माने जाते हैं। हर साल यह शहर दुर्गा पूजा के दौरान एक अद्भुत धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है।

दुर्गा पूजा, भारत के एक प्रमुख त्योहारों में से एक है, जिसे देशभर में पूरे उत्साह और भव्यता के साथ मनाया जाता है। यह पर्व विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इसके अलावा ओडिशा, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश समेत अन्य राज्यों में भी इसे बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व अच्छाई की बुराई पर जीत का प्रतीक है, जो देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय को दर्शाता है। **बंगाली समुदाय के लिए यह छह दिन का उत्सव होता है, जिसे महालया, महा षष्ठी, महा सप्तमी, महा अष्टमी, महानवमी और विजयदशमी के रूप में मनाते है।**

बड़े बड़े आकर्षक पंडाल में माँ दुर्गा की मूर्ति को विराजित किया जाता है। जिसकी सजावट बहुत ही पारंपरिक तरीके से होती है। हर पंडाल की सज्जा देखते है बनती है। **"दुग्गा दुग्गा"** का जाप करती हुई सभी महिलाएं **पूजा (पूजो)** के लिए पंडालों की तरफ जाती है, जिसमे वे सब माता से जीवन में आगे की सुरक्षित यात्रा की कामना करती है। घर के हर कोने में ज्योतिर्मय धुनुची की सुगंध के फैली होती है। ढाक से आने वाली तीव्र ताल की आवाज़ कोलकाता की सड़कों को गुंजायमान कर देती है। सब सुंदर पोशाक लाल और सफ़ेद साड़ी पहनें हुए, भारी गहने, माथों पर सिंदूर और बिंदियों के साथ मोटी चूड़ियाँ पहनें महिलाओं का रूप देखते बनता है। नौ दिनों तक जब माँ दुर्गा अपने चार बच्चों के साथ **बाशा (घर)** में रहती हैं, तब तक गलियों में रंग और उत्सव का उल्लास भरपूर होता है, और **दसवें दिन माता का अपने पति शिव के साथ मिलन होता है जिसे "विजयदशमी" के रूप में मनाते है।**

यह वास्तव में यहां समाप्त नहीं हो जाता है बल्कि दुर्गा पूजा की विशाल भव्यता और शैली केवल नौ दिनों के त्यौहार तक ही सीमित नहीं है। जबकि यह स्वयं उन भक्तों के दिलों में घर करती है, जो जीवन में आने वाली छोटी-छोटी अड़चनों पर "माँ दुग्गा" का उच्चारण और स्मरण करते हैं। शहर की गलियों में लंबे समय तक पूजा की समाप्ति के बाद भी उल्लू ध्वनि (बहुत ही शुभ और बुरी शक्तियों से बचाव करने वाली एक उच्च-स्वर ध्वनि जो दोनों गालों पर जीभ से आघात करके उत्पन्न होती है) गूँजती रहती है। जिसे बुरी शक्तियों से रक्षा करने वाला माना जाता है।

क्या है दुर्गा पूजा का इतिहास?

दुर्गा के जन्म की कहानी देवी भागवतम् में वर्णित है। किंवदंतियाँ देवी दुर्गा को हिंदू देवगणों में **तीन सबसे शक्तिशाली देवों - ब्रह्मा (निर्माता), विष्णु (संरक्षक) और शिव (संहारक) - की रचना के रूप में बताती हैं। जिनकी रचना महिषासुर के वध के लिए हुई।**

इस पवित्र ग्रंथ के अनुसार, महिषासुर नामक एक असुर का जन्म हुआ, जिसने असुरों पर देवताओं की हार जीत देखी। असुरों की लगातार हार से परेशान होकर, उसने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या शुरू की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर, भगवान ब्रह्मा ने उसे वरदान दिया कि उसे न कोई मनुष्य मार सके,न कोई देवता, केवल एक महिला ही उसकी मृत्यु का कारण बन सकती है। इस वरदान का लाभ उठाते हुए, महिषासुर ने असुरों की सेना के साथ पृथ्वी और स्वर्ग पर आक्रमण किया। पृथ्वी पर बजट लूटपाट मचाई और अमरावती में इंद्र से युद्ध किया। अंततः इंद्र की सेना को हराकर स्वर्ग पर कब्जा कर लिया। तब देवताओं ने हारकर त्रिदेवों से मदद की गुहार लगाई। देवताओं की हार से दुखी और क्रोधित त्रिदेवों ने इस पर गहन विचार किया। महिषासुर को मिले वरदान को ध्यान में रखते हुए, **भगवान ब्रह्मा ने कहा, "महिषासुर का वध केवल एक स्त्री ही कर सकती है।"** परंतु तीनों लोकों में ऐसी कोई शक्तिशाली महिला नहीं थी जो युद्ध कर सके। तब त्रिदेवों ने अपनी संयुक्त शक्तियों से देवी दुर्गा की रचना की। सभी देवताओं ने देवी को अपने-अपने अस्त्र दिए, और हिमालय के देवता हिमवत ने उन्हें एक शेर दिया।

अमरावती में देवी दुर्गा को देखकर महिषासुर एक स्त्री से युद्ध करने के विचार पर हंस पड़ा, लेकिन युद्ध के दौरान उसे देवी की असीम शक्तियों का आभास हुआ। **दस दिनों की भीषण लड़ाई में, महिषासुर ने कई रूप बदले, पर देवी दुर्गा अडिग रहीं।** अंततः, जब **महिषासुर अपने भैंस के रूप में आया, तो देवी दुर्गा ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया,** और इस प्रकार, स्वर्ग और पृथ्वी को

अत्याचारी महिषासुर से मुक्त कर दिया। **इसलिए, देवी दुर्गा को "महिषासुर मर्दिनी" कहा गया।** यह दृश्य दुर्गा पूजा की मूर्तियों में दिखाया जाता है, जहाँ माँ दुर्गा असुर का वध करती हुई उसी तरह दिखाई जाती हैं जैसे तांडव करते हुए शिव की मुद्रा होती है।

दुर्गा पूजा का इतिहास -

एक आराध्य के रूप में देवी की उत्पत्ति काफ़ी समय पहले ही हो गयी जिसक उल्लेख हमें वैदिक युग के विभिन्न ग्रंथों और रामायण एवं महाभारत में भी मिलता है। इसके बाद भी, 15वीं शताब्दी में कृत्तिवासी द्वारा रचित रामायण के वर्णन के अनुसार रावण के साथ युद्ध करने से पहले भगवान राम ने दुर्गा की पूजा 108 नील कमल और 108 पवित्र दीपों से की थी। इसके साथ ही जिस दिन भगवान राम ने रावण को युद्ध में हराया था उस दिन दुर्गा पूजा का दशमी का दिन था। इसलिए विजय दशमी और दशहरा एक ही दिन मनाया जाता है।

दुर्गा पूजा पंडाल -

16वीं शताब्दी के साहित्य में पश्चिम बंगाल के जमींदारों द्वारा दुर्गा पूजा के भव्य आयोजन के प्रथम उल्लेख मिलते हैं। विभिन्न लेख बताते हैं कि राजा और जमींदार अपने गाँवों के लिए दुर्गा पूजा का आयोजन करते थे और इसका पूरा खर्च वहन करते थे। **"बोइन्दो बारिरी पूजो" (ज़मींदारों के घरों में पूजा) की परंपरा आज भी बंगाल में जीवित है, जहां बड़े घराने अपनी हवेलियों के आँगन में माँ दुर्गा की मूर्ति स्थापित करते हैं और लोगों को पूजा के लिए आमंत्रित करते हैं।**

दुर्गा पूजा की परंपरा को प्लासी के युद्ध (1757) से भी जोड़ा जाता है, जब अंग्रेज़ों ने नवाब सिराजुद्दौला को हराकर बंगाल पर कब्जा कर लिया। इस जीत के बाद, अंग्रेजों ने पूरे बंगाल में दुर्गा पूजा का आयोजन किया, जिससे एक नई सामाजिक और सांस्कृतिक लहर उठी और दुर्गा पूजा का महत्व बढ़ गया।

1760 ईस्वी में बंगाल में पहली बार दुर्गा पूजा के दौरान पंडाल सजाने की शुरुआत हुई। यह परंपरा दुर्गा पूजा को धार्मिक के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण साबित हुई, और तब से यह बंगाल की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन गई।

दुर्गा पूजा के आयोजन को लेकर कई दूसरी कहानियां -

दुर्गा पूजा के आयोजन को लेकर कई कहानियां प्रचलित हैं। एक मान्यता के अनुसार, नौवीं सदी में बंगाल के एक युवक ने पहली बार दुर्गा पूजा की शुरुआत की थी। वहीं, विद्वान रघुनंदन भट्टाचार्य का भी नाम

इस पूजा के पहले आयोजन से जुड़ा हुआ है। एक और कहानी बताती है कि ताहिरपुर के ज़मींदार नारायण ने कुल्लक भट्ट नामक पंडित के निर्देशन में पहली बार दुर्गा पूजा का आयोजन किया। समय के साथ, यह पूजा और अधिक लोकप्रिय होती गई और इसे बड़े पैमाने पर भव्य तरीके से मनाने की परंपरा बन गई।

दुर्गा पूजा का महत्व -

1. बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक : दुर्गा पूजा बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। यह पर्व उस पौराणिक घटना का स्मरण कराता है, जब देवी दुर्गा ने महिषासुर नामक राक्षस का वध कर संसार को उसके अत्याचार से मुक्त किया था।

2. महिला शक्ति का प्रतीक : यह त्योहार स्त्री शक्ति का भी प्रतीक है। देवी दुर्गा को समर्पित यह पर्व महिलाओं की शक्ति और उनके साहस का सम्मान करता है, जो समाज में समानता और सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है।

3. भव्यता और विशालता का पर्व : दुर्गा पूजा भारत के सबसे भव्य और विशाल त्योहारों में से एक माना जाता है। खासतौर पर पश्चिम बंगाल में, यह उत्सव अत्यंत धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया जाता है। विशाल पंडाल, रंग-बिरंगे आयोजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम इसे अनोखा बनाते हैं।

4. सामाजिक और सांस्कृतिक एकता : इस पर्व का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें समाज के सभी वर्ग, जाति, और समुदाय के लोग एक साथ आते हैं। यह भाईचारे और सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा मनाई जाती है, जो हिंदू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन मां लक्ष्मी का जन्म हुआ था। देवी लक्ष्मी ने दिवाली के दिन अवतार लिया था और किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए पुनः धरती पर लक्ष्मी नाम से जन्म लिया। इसलिए शरद पूर्णिमा को देवी लक्ष्मी के आगमन का विशेष दिन माना जाता है। इस दिन चंद्रमा अपनी सभी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है, और यह विश्वास है कि चंद्रमा की किरणों से अमृत की वर्षा होती है। शरद पूर्णिमा की रात की चांदनी सबसे अधिक उज्जवल और शक्तिशाली मानी जाती है। इस दिन ब्रह्म कमल, जो देवी और देवताओं को प्रिय पुष्प है, विशेष रूप से खिलता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार, शरद पूर्णिमा पर किए गए धार्मिक अनुष्ठान का फल कई गुना बढ़ जाता है। जो व्यक्ति इस व्रत को विधिपूर्वक और श्रद्धा से करता है, उस पर मां लक्ष्मी की कृपा होती है और उसकी आयु लंबी होती है।

शरद पूर्णिमा का महत्व - कहा जाता है कि शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा धरती के अत्यधिक पास होता है। इस वजह से चंद्रमा से निकलने वाले रासायनिक तत्व सकारात्मक ऊर्जा के साथ धरती पर गिरते हैं, जिससे उस ऊर्जा को ग्रहण करने वाले व्यक्ति के जीवन में सकारात्मकता बढ़ती है। इस दिन मां लक्ष्मी धरती पर विचरण करती हैं, और **बंगाल में इसे "कोजागरा" के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है "कौन जाग रहा है?"**

शरद पूर्णिमा को **"कोजागरी पूर्णिमा", "रास पूर्णिमा" और "कौमुदी महोत्सव"** के नाम से भी पुकारा जाता है। इस दिन चांदनी में खीर बनाकर रातभर रखने और अगले दिन खाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह उपाय विशेष रूप से श्वास या दमा रोगियों के लिए लाभकारी माना जाता है, और इससे आंखों की रोशनी भी बढ़ती है। शरद पूर्णिमा के बाद से ठंड का मौसम भी धीरे-धीरे शुरू हो जाता है। इस दिन मां लक्ष्मी की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है।

पूरा पढ़े - www.

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

दीप

कभी न तम से हारे दीप।
फैलाते उजियारे दीप।

घर कर देते आलोकित
जल आँगन - चौबारे दीप।

दीवाली में भूपर ज्यों
आये उतर सितारे दीप।

डर प्रतिकूल हवाओं का
काँप रहे बेचारे दीप।

निज अस्तित्व बचाना है
लगा रहे हैं नारे दीप।

स्नेह और बाती के संग
जीवन - मूल्य सँवारें दीप।

निर्धन की भी कुटिया में
ससम्मान पधारें दीप।

रत हैं राष्ट्र - साधना में
रूप तपस्वी धारे दीप।

- गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' जी,
आदिलनगर. विकासनगर
(लखनऊ)

शरद पूनम की रात

चांद –
बरसा रहा अमृत ।

शरद पूनम की रात है ।
अमरित की बरसात है ।
चांदनी में आज उर के -
मचले हुए जज़्बात हैं ।

तार –
प्यार के हुए झंकृत ।

आओ , हम रसपान करें ।
प्रेम - मूर्त का ध्यान करें ।
होंठ - होंठ से चिपकाकर -
नयनों से हम गान करें ।

प्यार –
करे हृदय अलंकृत ।

चांद देखे कनखियों से ।
हौले - हौले अंखियों से ।
देख प्यार में मगन हमें -
करता चुगली सखियों से ।

रात –
घुरे हमें अनवरत ।

चांदनी में मदहोश हुए ।
चांदनी ने ज्यों मन छुए ।
नयनों से आज प्यार का -
बूंद , बूंद , बूंद रस चुए ।

हुई –
चांदनी की फ़ितरत ।

- अशोक आनन जी, मक्सी, जिला - शाजापुर (म.प्र.)

माँ, याद है मुझे,
जब आपने और पापा ने मुझे पढ़ाने का फैसला लिया था,
तब कैसे समाज ने कहा था, "अरे, लड़की को पढ़ाने का क्या फायदा?"
"ये तो पराया धन है ना?"

माँ, याद है मुझे,
कैसे उस वक्त आप मेरे लिए इस समाज से लड़े थे।
आपने मुझे अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया।
आपने ही मुझे सही फैसले लेना सिखाया।

माँ, याद है मुझे,
कैसे जब मुझे स्कूल में बच्चों ने परेशान किया,
तो आपने ही मुझे उनसे लड़ने की सीख दी।
मुझे सही और गलत में फर्क समझने की सीख दी।

पर माँ, आज इन यादों का चित्र, मेरे दिमाग में कुछ धुंधला सा हो गया है।
आज जब मुझे कुछ लड़कों ने घेरा,
तब मैं शायद अपने लिए सही निर्णय न ले सकी।

लेकिन माँ, मैं लड़ी थी, उनसे खुद के लिए,
अपने सम्मान के लिए लड़ी थी।
लेकिन माँ, आज मैं हार गई, इस समाज के लोगों से, इन अत्याचारों से,
आज मैं हार गई।

माँ, मुझे माफ़ करना,
मैं आपकी तरह इस समाज से- अपने खुद के लिए भी न लड़ सकी।
माँ, मुझे माफ़ करना। माँ, मुझे माफ़ करना॥

~एंजेल गुप्ता जी, (दसवीं कक्षा की छात्रा) बबराला, संभल (उत्तर प्रदेश)

इस मार्मिक कविता का चित्रण मेरे द्वारा कोलकाता की डॉक्टर मोमिता देबानाथ के साथ हुए भयानक शर्मनाक कृत्य के प्रति एक श्रद्धांजली रूप में अर्पित है। मेरी यह कविता, साथ ही तमाम उन औरतों के प्रति संवेदनशीलता को प्रदर्शित करती शब्दावली है जो भीतर ही भीतर समाज में विचर रहे मर्दों के प्रति और समाज में रहते हुए अपनी प्रतिबद्धता को स्वीकार करती हैं, परंतु अपने स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने वाले तत्वों को भी अस्वीकृत करती हैं। ऐसी नारीवाद जाति को मेरा नमस्कार है।

क्यों कुंठित हो ?

दर्जनों अनुतरित प्रश्न घर कर जाते हैं!
जब एक बेटी की लाश को मां-बाप उठाते हैं!!
क्या है कसूर ?? क्या समयविधि थी !
बस इतना ही ? कि, वह एक लड़की थी ?
परिकल्पनाओं से परे, एक प्रतिभा संपन्न,
कोमल कल्पनाओं का कर दिया देहांतरण !
कब चेतना का आविर्भाव होगा ?
हां मैं भी इंसान हूं, ओ मर्द! तुझे कब एहसास होगा ?

संजोए थे कुछ सपने मैने भी, खुद को विचार मुक्त रखकर
मगर तुम्हें शांति मिलती है हमेशा ,मुझे ख़ाक कर कर।
तुमसे भी प्राचीन हूं ,परंतु, प्रतिस्पर्धा रखती नहीं ।
तुम्हारे इस हठवाद के कारण, सत्री कहीं भी खरी उतरती नहीं !
मेरे ही शून्य से सृजित होकर, अपना अस्तित्व पाते हो !
खून तो छोड़ो अरे, मेरा हाड़ मांस भी तुम खाते हो !
कब मिटेगी तेरी भूख प्यास ? मां, बहन, और बेटी सब तो है तेरे पास !
वासना के बीज, जो भीतर तूने बोए हैं,
पशु रूप धारण कर ,सारे रिश्ते खोए हैं !
तू पापी, तू अंधा, बेहूदा और व्यर्थ सदा रहेगा!
कोरी प्रतिष्ठा के अंदर,अंधकार और गर्त सहेगा! ...

...
अपनी इंद्रियों और तर्क को बिल्कुल ना समझ पाओगे ?
जब तक समझ आएगी, बस! चिल्लाते रह जाओगे !
तेरे अस्तित्व को जब तक, धूल ना मैं चटाऊंगी।
याद रखना निर्भया की तरह, सांस ना तब तक ले पाऊंगी ।
मेरा चलना, मेरा रुकना, हिम्मत मेरी बढ़ाएगा !
चीर के रख दूं तुमको फिर मैं,
जो तू मेरे पथ में आएगा।
ब्रह्मांड का एक अंश बनकर हमेशा जिंदा रहूंगी मैं।
तुम्हारे हर वार के कारण, पर्वत बन कर अड़ूंगी मैं ।
हर घाव के बाद भी, मैं खुद की कहानी लिखती रहूं ।
हार तो बिलकुल मानूं न मैं, अपनी राह पर डटी रहूं॥

क्यों शक्ति मेरी को आजमाते हो, फिर तांडव नृत्य करवाते हो।
अपना अंत न देख पाओगे, क्यों धरा को पापी बनाते हो?
विनाश होगा जब सृष्टि का, कुछ भी ढूंढ ना पाओगे
पा कर देह मानव की तुम, क्या राक्षस ही कहलाओगे?
आ जाओ वापिस बुद्धि पर, गर तुम देवी पूजन करते हो।
मांग लो माफी उस देवी से, जिसकी भी शर्म तुम करते हो।
शरीर के मारे जाने पर,मत समझो मैं भी मर गई हूं ।
देख लेना सड़कों पर, मैं महिषासुर मर्दिनी बन गई हूं!
मत समझो कि कमजोर हैं हम, नभ छूने की पंथिक हैं।
विडंबना बतलाओ अपनी, हमसे तुम क्यों कुंठित हो ?
क्यों कुंठित हो ? क्यों कुंठित हो ?
क्यों कुंठित हो ?

- सुधा मेहता जी, चंडीगढ़

अपनी उम्मीद की टोकरी
खाली कर दीजिए
परेशानियां नाराज होकर
खुद चली जाएंगी।

सफल होने के लिए
व्यवहार में बच्चा, काम
में जवान और
अनुभव में वृद्ध होना
आवश्यक है।

वक़्त का पासा पलट भी
सकता है, इसलिए
सितम वही करना जो
सह सको।

इंसान कर्म करने में
मनमानी तो कर
सकता है, परंतु फल
भोगने में नहीं।

दीया और बाती अपनी-
अपनी जगह सही होते हैं,
आग तो कोई और लगाता
है।

किसी के पैरों में गिरकर
प्रतिष्ठा पाने के बदले
अपने पैरों पर चलकर
कुछ बनने की ठान लो।

363. क्या युधिष्ठिर सशरीर स्वर्गलोक में पहुंचे...?

- शरणागत के प्रति युधिष्ठिर के करूण भावों से भगवान धर्मराज बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्र के रथ में बैठकर युधिष्ठिर ने सशरीर स्वर्ग में प्रवेश किया।

364. अब तक कितने मानव को सशरीर स्वर्ग की प्राप्ति हुई है...?

- युधिष्ठिर के सशरीर स्वर्ग पहुंचने पर देवर्षि नारद जी कहते है कि भौतिक शरीर के साथ स्वर्गलोक में आने का सौभाग्य युधिष्ठिर से पहले किसी को प्राप्त नहीं हुआ था।

(इसके साथ ही महाप्रास्थानिक पर्व समाप्त हुआ। अब शुरू होता है महाभारत का अठारहवां और अन्तिम पर्व स्वर्गारोहणपर्व)

365. स्वर्ग पहुंच कर युधिष्ठिर ने क्या देखा...?

- कि महापापी दुर्योधन स्वर्ग में दिव्य सिंहासन पर शोभा पा रहा है, और उनके भाई और द्रौपदी कहीं पर दिखाई नहीं दे रहे है।

366. युधिष्ठिर ने फिर क्या कहा...?

- जब युधिष्ठिर ने स्वर्गलोक में अपने चारों भाईयों और देवी द्रौपदी को नहीं देखा तो वे बोले कि उनके बिना मुझे स्वर्गलोक की चाह नहीं। मैं उसी लोक में जाना चाहता हूं जहां पर वे गये है।

367. उसके बाद देवदूत युधिष्ठिर को कहां ले गये...? - नरक में..!! जहां का वातावरण बड़ा ही भयानक, दुर्गन्धि भरा व यंत्रणादायक था।

368. कुछ देर बाद युधिष्ठिर जब नरक से जाने लगे तो उन्हें क्या सुनाई दिया...?

- कि हे धर्मनंदन...! आप थोड़ी देर और यहां ठहर जाये। आपके आने से हमारे कष्ट कम हुए है, सुगन्धित हवा चलने लगी है और हमें आनन्द मिल रहा है।

369. जब युधिष्ठिर ने नरक में ही रहने का निश्चय किया तो क्या हुआ...?

- अगले ही पल धर्म सहित सभी देवता वहां पहुंच गये। सारा दृश्य बदल गया, अन्धकार की जगह प्रकाश फैल गया और चहुं ओर सुगंधित शीतल हवा बहने लगी।

370. युधिष्ठिर को पहले नरक के दुख और

दुर्योधन को पहले स्वर्ग के सुख का भोग क्यों करवाया गया...?

- देवराज इन्द्र बताते है कि जिनके पापकर्म अधिक व पुण्य थोड़े होते है तो वे पहले स्वर्ग का सुख भोगते है और जिनके पुण्यकर्म अधिक व पापकर्म कम होते है वे पहले नरक का दुख भोगते है।

371. स्वर्ग में आने के पश्चात युधिष्ठिर ने क्या किया...?

- देवराज इन्द्र व धर्मराज के आदेश पर युधिष्ठिर ने स्वर्गलोक में बह रही देवनदी मन्दाकिनी (गंगा) में स्नान कर मानव देह का त्याग किया, तत्पश्चात उच्च लोकों में निवास किया।

(इस प्रसंग के साथ ही महाभारत के अन्तिम पर्व स्वर्गारोहण व महाभारत की कथा समाप्त होती है)

372. क्या महाभारत को घर में नहीं रखना / पढ़ना चाहिये...?

- यह वर्तमान समय में प्रचलित एक गलत व अधकचरी धारणा है। चूंकि समय के साथ महाभारत शब्द को कलह व लड़ाई-झगड़े के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा इस कारण यह धारणा बन गयी कि महाभारत ग्रन्थ घर पर रखने से घर-परिवार में कलह हो जाती है। अत: इसे घर में रखना व पढ़ना नहीं चाहिये। जबकि सत्य इसके विपरीत है। यह महान ग्रन्थ बताता है कि किन कारणों से परिवार में वैमनस्य हो जाता है और कैसे उससे बच कर परिवार के बिखराव को रोका जा सकता है। यह ग्रन्थ धर्म, नीति के उपदेशों के माध्यम से संगठित व सुखी परिवार, समाज व देश की महत्ता को बताता व सीखाता है। इसी ग्रन्थ के माध्यम से हमें भगवान की पावन वाणी- "श्रीमद्भगवद्गीता" के माध्यम से उपनिषदों व वेदों का सार, सहज भाषा में उपलब्ध हुआ है।

महाराज जनमेय के पूछने पर वैशम्पायन जी कहते है कि मनुष्य को सदा ही महाभारत का श्रवण-पठन व मनन करते रहना चाहिये। जिसके घर में महाभारत ग्रन्थ मौजूद है, उसके हाथ में विजय है। महाभारत परम पवित्र ग्रन्थ है। यह सम्पूर्ण शास्त्रों में उत्तम है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में उल्लेखित स्तुति भी है -

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

अन्तर्यामी नारायणस्वरूप भगवान श्रीकृष्ण, उनके सखा नर-रत्न अर्जुन, उनकी लीला प्रकट करने वाली भगवती सरस्वती और उसके वक्ता भगवान व्यास को नमस्कार करके आसुरी सम्पत्तियों का नाश कर अन्त:करण पर विजय प्राप्त करने वाले महाभारत ग्रन्थ का पाठ करना चाहिये।

373. महाभारत की रचना कितने समय में पूर्ण हुई...?

- मुनिवर, भगवान श्रीकृष्णद्वैपायन ने तीन वर्षों में सम्पूर्ण महाभारत को पूर्ण किया।

(क्रमश:.....अगले माह)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

नवरात्रि पर्व स्पेशल: उपवास में खाई जाने वाली इडली, सांभर और चटनी

फराली इडली-सांभर बनाने के लिए सबसे पहले इडली तैयार करें। इसके लिए सामा और साबूदाना को साफ कर के धो लें और छानकर उसमें दही, 2 टी-स्पून अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट और सेंधा नमक डालकर अच्छी तरह मिलाएं। इस मिश्रण को 6-8 घंटे के लिए भिगोकर रख दें। फिर इसे बिना पानी डाले मिक्सर में मुलायम पीस लें और अलग रख दें। अब भरवा मिश्रण तैयार करें। इसके लिए एक नॉन-स्टिक कढ़ाई में तेल गरम करें, उसमें जीरा डालें। जब जीरा चटकने लगे, तो उसमें 2 टी-स्पून अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट डालकर कुछ सेकंड तक भूनें। फिर उसमें उबले आलू, शक्कर, नींबू का रस और सेंधा नमक डालें। इसे अच्छी तरह मिलाकर धीमी आँच पर 5 मिनट तक पकाएं। इस मिश्रण को ठंडा होने दें और फिर 16 बराबर हिस्सों में बाँट लें। अब चिकने इडली साँचों में 1 टेबल-स्पून इडली का घोल डालें और उसमें आलू का एक हिस्सा रखें। ऊपर से थोड़ा सा मूंगफली पाउडर छिड़कें और फिर एक और टेबल-स्पून इडली का घोल डालें। इडली स्टीमर में 10 मिनट तक स्टीम करें।

अब फराली सांभर बनाएं। इसके लिए एक गहरे पैन में पानी उबालें और उसमें 1 कप लौकी, 1 कप सूरण और आलू डालकर 8-10 मिनट तक पकाएं, जब तक सब्जियां पूरी तरह से पक न जाएं। इसके बाद इन्हें पानी से निकालकर ठंडा करें और मिक्सर में मुलायम पीस लें। अब इस पेस्ट को एक गहरे पैन में डालें, 4 कप पानी डालें और अच्छी तरह मिलाकर धीमी आंच पर 7-8 मिनट तक पकाएं। इसके बाद बचा हुआ 1/2 कप लौकी, सूरण, पीसा हुआ पाउडर और सेंधा नमक डालें और 3-4 मिनट तक पकाएं। तड़का तैयार करने के लिए, एक छोटे पैन में तेल गरम करें और उसमें जीरा डालें। जब जीरा चटकने लगे, तो उसमें 2 साबुत मिर्च डालें और कुछ सेकंड तक भूनें। इस तड़के को उबलते सांभर में डालें और अच्छी तरह मिलाकर 3-4 मिनट तक पकाएं। अंत में नींबू का रस डालकर मिला लें। **इडली-सांभर को मूंगफली की दही चटनी के साथ परोसें।** यह चटनी भुनी हुई मूंगफली को दही, अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, जीरा और सेंधा नमक मिलाकर बनाई जाती है।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

माँ मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। वाह! मैदान भी हरा–भरा है। चीनू उछलते हुए अपनी माँ से कहने लगा; हम रोज आ कर खेलेंगे न.....!

हाँ बेटा चीनू; माँ ने हँसते हुए हामी भरी। खुले मैदान में चीनू जैसे और भी छोटे – छोटे बच्चे खेल रहे थे यह देख चीनू और भी खुश हो गया। चीनू की दोस्ती उन नन्हें –नन्हें बच्चों से हो गई। प्रतिदिन आते और मजे करते। इसी बहाने सबसे मिलना–जुलना भी हो जाता था। नील गगन के नजारे, ठंडी–ठंडी हवाएं, स्वच्छ वातावरण हृदय को छू लेती थी।

वहीं; सामने के बालकनी से नन्हीं प्रीत (बच्ची) भी इन्हें खेलते देखती और आनंद लेती; साथ ही साथ सोचती मैं भी इनके साथ खेलने जाती लेकिन..... दूर से देख कर ही मुस्कुराती।

आज शाम चीनू खेलते–खेलते थोड़ी दूर मैदान के दूसरे छोर पर चला गया। माँ अपनी सहेलियों से बात करने में व्यस्त क्या हो गई... जैसे ही चीनू की माँ की नज़र हटी वैसे ही दुर्घटना घटी। एक विशाल दरिंदा बाज आया और चीनू को उठा ले जा रहा था। चीनू जोर–जोर से चिल्लाने लगा। माँ.... माँ मुझे बचाओ.... बचाओ.....।

सभी की नज़र चीनू की तरफ पड़ी। सभी दौड़ने लगे। प्लीज़ माँ मुझे बचा लो.....! दर्द भरी आवाज से चीनू कराहने लगा। चीनू की माँ सुध–बुध खोने लगी। पैरों तले जमीन खिसक गई। साँसें तेजी से ऊपर–नीचे होने लगी। आँखों से ऑसू थम नहीं रहे थे।

माँ भी चिल्लाने लगी; मेरे बेटे को कोई बचा लो.....। **हे! विधाता ये क्या हो गया.....?** मेरा चीनू मुझे लौटा दो। बाकी बच्चे अपने–अपने माता–पिता से सहम कर लिपट गए। थोड़ी देर बाद..... सभी चीनू की माँ को सांत्वना देने लगे। चुप हो जा री..... चीनू की माँ, चुप हो जा...। होनी को कौन टाल सकता है। हमारा जीवन कब तक है ऊपर वाले के अलावा कोई नहीं जान सकता। वो दरिंदा बाज न जाने कब से चीनू पर नज़र डाल रहा था। चीनू की माँ सुबकने लगी। बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन आँखों से ओझल होते देर न लगी।

चीनू की आवाज सुन प्रीत झट से बालकनी में आ खड़ी हुई, जब तक काफी देर हो चुकी थी। चीनू बहुत दूर जा चुका था।

एक मां अपने बच्चे के दूर जाने से कैसे तड़प रही, प्रीत टकटकी लगाए देख रही थी; और मन ही मन स्वयं को कोसने लगी काश....!! मैं चीनू को बचा पाती। **इंसान हो या पशु-पक्षी; माँ तो माँ होती है न....!**

माँ का दर्द माँ ही जाने; आज मैं वहाँ पर जाती तो चीनू जो कि एक मुर्गी का बच्चा था शायद वह बच जाता।

- **प्रिया देवांगन जी, "प्रियू", राजिम, जिला - गरियाबंद (छत्तीसगढ़)**

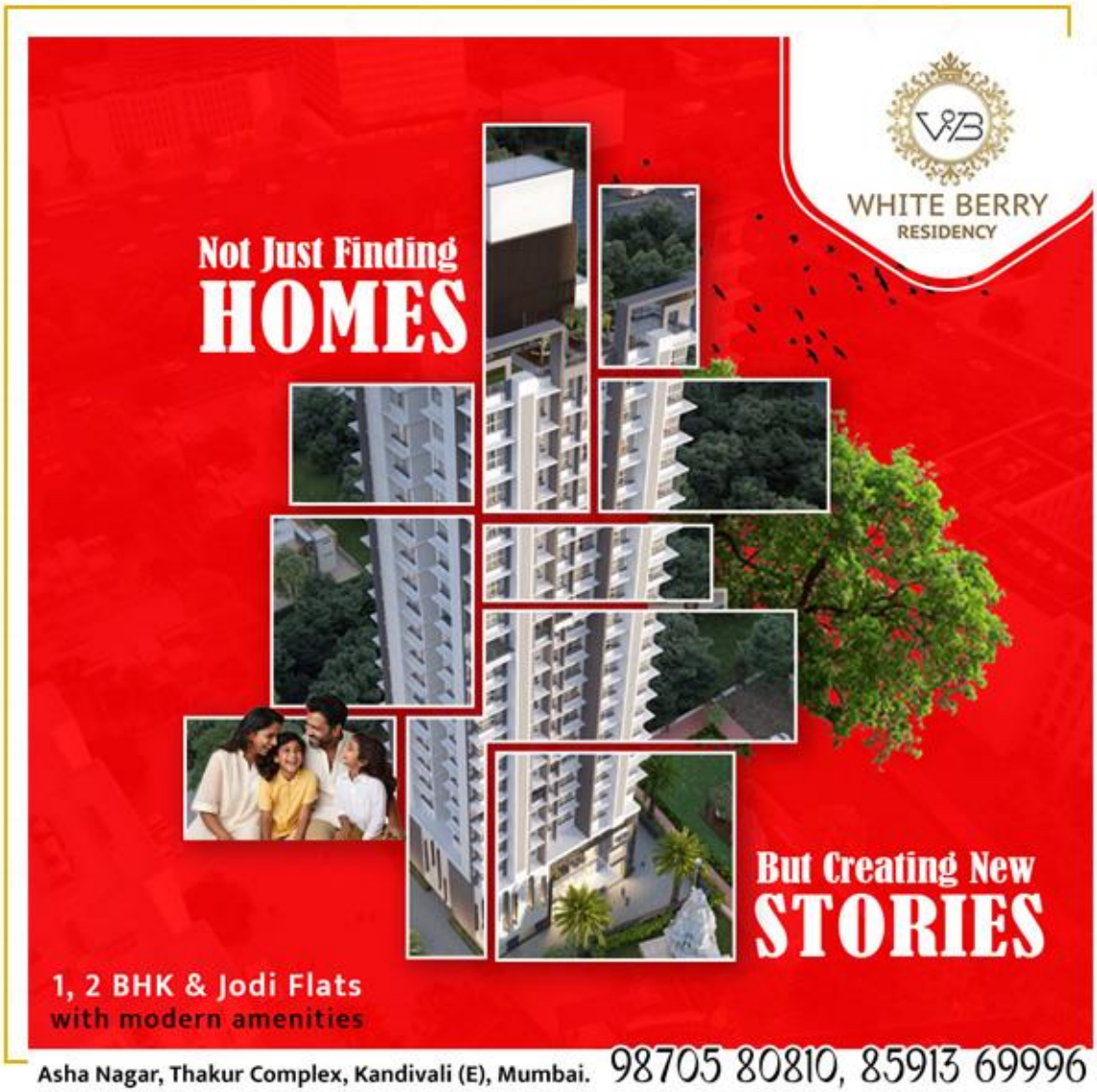

राजेश्वर प्रसाद की उम्र यद्यपि काफी हो चुकी थी लेकिन अपनी वास्तविक उम्र से बहुत कम के लगते थे राजेश्वर प्रसाद।

और इसका कारण था उनकी संतुलित दिनचर्या व जीवनचर्या। नियमित रूप से व्यायाम और सैर करना तथा खानपान में संयम बरतना उनकी आदत बन चुकी थी। उनकी दिनचर्या और आदतों का उनके युवा पुत्र विवेक पर भी काफी गहरा प्रभाव था। विवेक भी स्वास्थ्य के प्रति बेहद सचेत था और व्यायाम करने और दौड़ लगाने में कभी कोताही नहीं बरतता था।

बेशक विवेक युवा था और उसमें अधिक चुस्ती-स्फूर्ति थी लेकिन राजेश्वर प्रसाद भी किसी तरह से कम नहीं थे।

एक दिन संयोग से पिता और पुत्र दानों साथ-साथ सैर को निकले और पार्क में जाकर दौड़ लगाने का कार्यक्रम बना। मज़े-मज़े में दोनों के बीच मुक़ाबला होने लगा। मज़ाक़-मज़ाक़ में पिता ने पुत्र को चुनौती दी। दोनों के बीच दौड़ प्रारंभ हुई। कभी पिता आगे निकल जाते तो कभी पुत्र लेकिन अंत में जीत पिता की ही हुई। पुत्र ने कहा, **"मैं बहुत ख़ुश हूँ कि जीत आपकी हुई।** आप पिता हैं तो आपका विजेता होना अच्छा लगता है।" पिता ने कुछ नहीं कहा लेकिन जीत जाने के बावजूद उनके चेहरे पर कहीं भी प्रसन्नता का नामोनिशान मौजूद नहीं था।

काफी वक़्त गुज़र गया पर दोनों की दिनचर्या में कोई अंतर नहीं आया। दोनों अब भी व्यायाम करते और दौड़ लगाते। राजेश्वर प्रसाद विवेक को अधिकाधिक अभ्यास करने के लिए प्रेरित करते। विवेक सचमुच बहुत अच्छा दौड़ने लगा था। एक दिन फिर मज़ाक़-मज़ाक़ में पिता ने पुत्र को चुनौती दे डाली। मुक़ाबला प्रारंभ हुआ।

कभी पिता आगे निकल जाते तो कभी पुत्र लेकिन इस बार पुत्र का पलड़ा भारी था। इसके बावजूद राजेश्वर प्रसाद ने आगे निकलने की अपनी कोशिश में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। उनके प्रयास से लग रहा था कि वो हर हाल में जीतना चाहते हैं। राजेश्वर प्रसाद जीतना चाहते ही नहीं थे जीते भी।

दौड़ जब निर्णायक दौर में पहुँची तो जीत का श्रेय विवेक के हाथ लगा। यद्यपि राजेश्वर प्रसाद हार चुके थे लेकिन उनके चेहरे पर झलकती

प्रसन्नता की लहरें साफ दिखलाई पड़ रही थीं।

राजेश्वर प्रसाद ने विवेक के कंधे पर हाथ रखकर कहा, **"जिस दिन मेरा बेटा मुक़ाबले में मुझसे हार गया था और मैं जीत गया था वो मेरी बहुत बड़ी हार थी।** आज मैंने उस हार का बदला ले लिया है। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि आज मैं हार गया हूँ और मुक़ाबले में मेरा पुत्र मुझसे जीत गया है। **मेरे पुत्र की जीत ही मेरी वास्तविक जीत है।"**

- **सीताराम गुप्ता जी, पीतमपुरा (दिल्ली)**

जिस तरह व्यापार के बही खातों के लिए एक मुनीम अर्थात अकाउंटेंट जरुरी होता है उसी तरह जीवन के लिए सत्संग भी अत्यंत आवश्यक है।

सेठजी पूरा विश्वास करते हुए अपने विश्वास पात्र मुनीम को अपने व्यवसाय का आर्थिक संतुलन उसके हाथों में सौंप देते है और मुनीम कुशलता के साथ सभी प्रकार की आर्थिक व्यवस्थाओं का सन्तुलन बनाये रखता है जिसकी वजह से सेठ जी व्यापार पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करके आगे बढ़ते है, सेठ और मुनीम का रिश्ता नौकर और मालिक का नहीं हो सकता क्योंकि व्यापार के लिए दोनों की अहम भूमिका है, अगर वित्तीय सन्तुलन सुचारु नहीं होगा तो व्यापार भरपूर मेहनत के बावजूद तरक्की नहीं कर सकता। इसके अंकेक्षण यानि सी. ए. की भी महत्वपूर्ण भूमिका है जो अर्थ-व्यवस्था व व्यापार की गतिविधियों के सन्तुलन पर अवलोकन करके वास्तविक स्थिति से अवगत करवाता है।

ठीक, ऐसी ही विचार धारा व व्यवस्था की आवश्यकता जीवन रूपी इस दुकान के लिए जरूरी है, वाद-विवाद, अव्यवस्थित कार्य प्रणाली, निरर्थक अहम भावना या राग-द्वेष-स्वार्थ इत्यादि नकारात्मक गुण-दोष के वशीभूत जीवन रूपी दुकान पर प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ेगा इसलिए सकारात्मक सोच के साथ दुर्भावनाओं से दूर रहते हुए दृढ़ निश्चय के साथ सुचारु व्यवस्थाओं का ध्यान रखते हुए जीवन का संचालन करना चाहिए और **समय-समय पर कुशल अंकेक्षण यानि सी.ए. (संत-महात्माओं-साधकों) से मिलकर लाभ-हानि की ऑडिट करवा लेनी चाहिए ताकि ईश्वर रूपी सरकार के आगे सही-सही आँकड़े प्रस्तुत कर सके**, इसके लिए जरूरी है कि 10 मिनिट अन्तर्मुखी होकर नियमित रूप से एकान्त में शान्त चित होकर रोकड़ का मिलान करें, अन्यथा हिसाब गड़बड़ा जाएगा इसकी प्रबल संभावना है।

- किशन कुमार लखाणी जी, बीकानेर (राजस्थान)

अमेरिका : हम शिक्षा देखते हैं
चीन : हम हुनर देखते हैं

भारत : हम जाति प्रमाण-पत्र देखन हैं..!

इंसान सच्चा होना चाहिए
झूठे तो बर्तन भी होते हैं..!

आजकल लोग हंसने में भी कंजूसी कर रहे हैं..
राक्षसों से ही कुछ सीख लो सर और धड़ अलग होने के बाद भी हंसते ही फरहते थे..!

जो चादर से ज्यादा पैर पसारते हैं वे
एक दिन हाथ भी पसारते हैं..!

हमेशा सत्य का मार्ग चुनो उस मार्ग में भी टोल लगा दूंगा.!

मैं हिंदी व्याकरण के संधि विच्छेद को लेकर बहुत ही कशमकश में हूं.... आप ही बताइए 'विवाह' में 'वाह' छुपी है या 'आह'..!

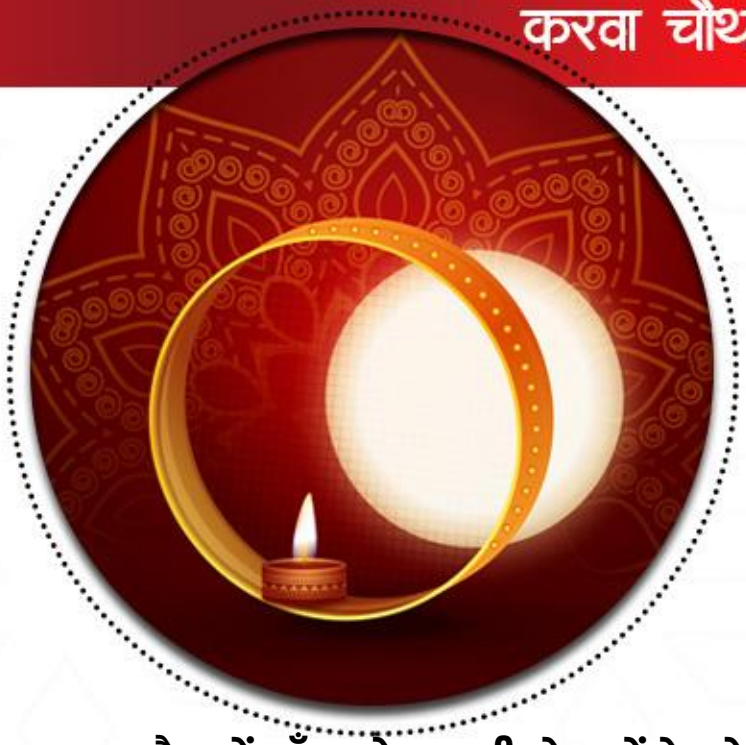

करवा चौथ में चाँद को छलनी से क्यों देखते हैं?

हिन्दू धर्म में अनेक त्यौहार हैं, जिन्हें भक्त, पूरे श्रद्धाभाव के साथ मनाते हैं। हर एक त्यौहार को मनाने एवं पूजने की विधि अलग होती है, जिसका नियमानुसार पालनकर, भक्त उस त्यौहार को संपन्न करते हैं। इन्हीं में से एक त्यौहार है, करवा चौथ। हिन्दू धर्म में करवा चौथ व्रत का विशेष महत्व माना गया है। **इस दिन सुहागिन महिलाएं, अपने पति की लंबी आयु और सुखी जीवन के लिए व्रत रखती हैं।**

यह व्रत सुहागिन महिलाओं के लिए सबसे अहम व्रत माना जाता है। करवा चौथ के दिन, महिलाएं बड़े ही श्रद्धा भाव से शिव-पार्वती की पूजा करती हैं। इस दिन **व्रत में भगवान शिव, माता पार्वती, कार्तिकेय जी और गणेश जी के साथ-साथ, चन्द्रमा की भी पूजा कर, चन्द्रमा को महिलाएं, छलनी में से देखती हैं और फिर उसी छलनी में से पति का चेहरा देखा जाता है।**

लेकिन, अक्सर यह सवाल मन में उठता रहता है कि, आखिर इस परपंरा के पीछे कारण क्या है? चन्द्रमा को छलनी से देखने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। लेकिन इस प्रथा का महत्व क्या है चलिए बताते हैं....**कहते है भविष्य पुराण में लिखा है कि चौथ का चाँद देखना वर्जित (मना) होता है।** चौथ का चाँद देखने से मिथ्या आरोप लग सकता है या फिर कहें कि कोई झूठा आरोप लग सकता है। वहीं करवा चौथ भी चौथ की ही तिथि है। **यही कारण है कि चाँद को इस दिन खाली देखने की बजाए किसी वस्तू का इस्तेमाल करके (छलनी की ओट से) देखा जाता है।**

एक और मान्यता के अनुसार **छल से बचने के लिए भी छलनी का इस्तेमाल करते हैं।** कहते हैं, प्राचीन समय में वीरवती नाम की विवाहित लड़की थी, जिसने शादी के बाद, पहली बार करवा चौथ का व्रत रखा था। उस वक्त, वह अपने मायके में थी और उसके भाईयों से उसका भूखा रहना देखा नहीं गया। इसीलिए उन भाइयों में से सबसे छोटे भाई ने पेड़ की डालियों में एक छलनी के पीछे जलता हुआ दीपक रखा और अपनी बहन वीरवती को भ्रम से चन्द्रमा दिखाकर, उसका व्रत खुलवा दिया। जिससे करवा माता रुष्ट हो गईं और अगले ही पल वीरवती के पति की मृत्यु का समाचार मिला।

अपनी इस भयंकर भूल का अहसास जब वीरवती को हुआ तो उसने अगले साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी पर फिर से करवा माता का यह व्रत, विधि-विधान से किया और हर छल से बचने के लिए, इस बार हाथ में छलनी लेकर चंद्र देव के दर्शन किए। इससे प्रसन्न होकर माता ने उसके व्रत को स्वीकार किया और उसके पति को जीवित कर दिया। तब से लेकर अब तक, हमेशा छलनी में से ही चन्द्रमा को देखने की परंपरा है।

ये भी माना जाता है कि **जब महिलाएं चाँद को देखती हैं और फिर पति के चेहरे को छलनी में दीपक रखकर देखती हैं, तो उससे निकलने वाला प्रकाश सभी बुरी नजरों को दूर करता है।** साथ ही जब दीपक की पवित्र रोशनी साथी के चेहरे पर पड़ती है तो पति-पत्नी के रिश्ते में सुधार आता है। हर साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन नई छलनी में से ही चाँद देखना चाहिए। जिससे किसी तरह का छल ना हो और करवा माता, व्रती महिला के, विधि-विधान से किए गए व्रत को स्वीकार करें। करवा चौथ, मुख्य पर्वों में से एक है, जिसका इंतज़ार हर वर्ष, महिलाएं बड़ी बेसब्री से करती हैं और अपने पति की लम्बी आयु के लिए, पूरे रीति-रिवाज़ों के साथ, करवा चौथ के व्रत को संपन्न करती हैं।

- **सोनल मंजू श्री ओमर जी, राजकोट (गुजरात)**

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

अहोई अष्टमी

संतान की दीर्घायु और समृद्धि के लिए एक पवित्र अनुष्ठान-

अहोई अष्टमी व्रत भारतीय संस्कृति में मातृत्व और संतान की दीर्घायु के लिए किए जाने वाले महत्वपूर्ण व्रतों में से एक है। यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रखा जाता है। यह व्रत मुख्य रूप से माताएं अपनी संतान की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि और उनके जीवन की समस्त कठिनाइयों को दूर करने की कामना से करती हैं। इसके साथ ही, जिन महिलाओं को संतान सुख की प्राप्ति नहीं हुई होती है, वे भी इस व्रत को संतान की प्राप्ति के लिए करती हैं।

अहोई अष्टमी के दिन महिलाएं दिनभर उपवास करती हैं और संध्या के समय अहोई माता की पूजा करती हैं। पूजा स्थल को गोबर या गेरू से लीप कर स्वच्छ किया जाता है। दीवार पर अहोई माता का चित्र या साही और उसके बच्चों का चित्रांकन किया जाता है। इसके बाद कलश की स्थापना की जाती है और अहोई माता की पूजा कर उन्हें दूध-चावल का भोग लगाया जाता है। **इस व्रत में महिलाएं तारों को अर्घ्य देकर व्रत खोलती हैं, जबकि करवा चौथ में चंद्रमा को अर्घ्य दिया जाता है। इस दिन महिलाएं चाकू या किसी नुकीली वस्तु का प्रयोग नहीं करती हैं और करवा चौथ के करवा का ही इस्तेमाल किया जाता है।**

व्रत की महत्ता और पौराणिक कथा -

अहोई अष्टमी के व्रत से जुड़ी एक पौराणिक कथा प्रचलित है। एक बार एक महिला जंगल में मिट्टी खोद रही थी, तभी गलती से उसका खुरपा साही के बच्चे को लग गया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। इस पाप से महिला के सभी संतानों की मृत्यु हो गई। दुखी होकर उसने पाप मुक्ति के लिए साही की मां से प्रार्थना की। साही माता ने उसे अहोई अष्टमी का व्रत करने का सुझाव दिया। इस व्रत के प्रभाव से उसकी संतानें वापस जीवित हो गईं और तभी से इस व्रत की परंपरा चल पड़ी।

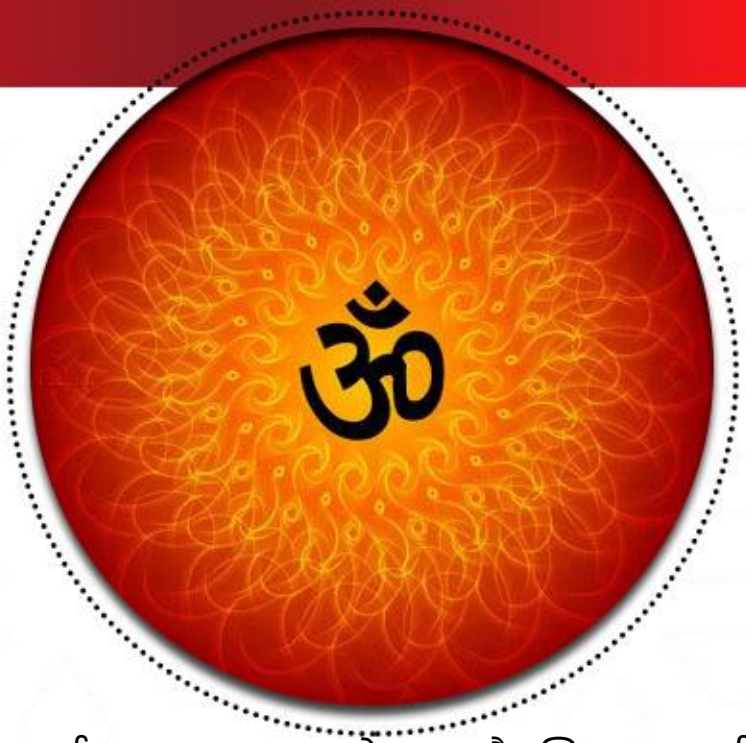

धर्म शब्द "धृ" धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है "धारण करना" यानी जो धारण किया जाए वह "धर्म" है। **"धारण"** करने से यहां अर्थ है, जीवन में धारण करना या जिस पर हमारा जीवन आधारित हो, वही हमारा "धर्म" है।

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि **जिससे हमारा जीवन व्यवस्थित हो सके वही "धर्म" है।** जब व्यक्ति आंतरिक विधर्म दशाओं से लौटकर आत्म-दशा, परमात्म-स्थिति और अपने मूल स्वभाव में लौट आता है, तब उसके जीवन में **"धर्म"** जीवित होता है।

क्रोध हमारा दुश्मन है, लेकिन, हमने उससे आत्मीयता बना ली है, **वैर** हमारा दुश्मन है, लेकिन, हम वैर-भाव में ही जी रहे हैं। **लोभ** हमारे जीवन का सबसे बड़ा पाप है, लेकिन, हर पल हम लोभ कर रहे हैं, **तृष्णा** हमारे जीवन की दुखांतिका है, लेकिन, तृष्णा हमें घेर चुकी है।

आचार्य देव ने कहा कि - हे मानव!! जीवन में जो क्रोध, काम, कषाय, मान, माया, लोभ और तृष्णा की विधर्म दशाएँ हैं, इन सबका परित्याग करके अगर तू परमात्मा की शरण में लौट आता है, तो तू "धर्म" को आत्मसात कर लेगा।

"धर्म" मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा मंगल है, अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं, जिसका मन सदा "धर्म" में रमा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं। **"धर्म" तो जीवन की सुगन्ध है, दिव्यता को पाने का सोपान है।** किसी को न सताना, आत्मनियंत्रण रखना और अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थिति में समत्वशील रहना, बस यही है **"धर्म" का सार, "धर्म" का स्वरूप, "धर्म" का जीवन और "धर्म" का मर्म है।**

"धर्म" वह यात्रा है, जहाँ व्यक्ति किसी लीक पर नहीं चलता वरन् वह अपना रास्ता स्वयं खोजता है। अपना जीवन **"धर्म"** के मार्ग पर प्रशस्त करें।

हे परमात्मा!!
"धर्म" हमारे जीवन की रोशनी बने, प्रेरणा बने और सुख-शांति पूर्वक जीवन जीने का आधार बने। सबका जीवन शांत और सुख से बीते और सभी अपने जीवन को धर्म से साधने का प्रयास करें, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

धन्यवाद...!

मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solution at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

दीपावली का प्रारंभ दिवस - धनतेरस

धनतेरस भारत में मनाये जाने वाला एक विशेष पर्व है यह पर्व दीपावली के 2 दिन पूर्व आता है क्योंकि दीपावली 5 दिन का भारतीय त्योहार है धनतेरस के दिन से ही दीपावली का शुभारंभ माना जाता है। भारतीय परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार धनतेरस के दिन सोने चांदी के आभूषण खरीदना बहुत शुभ माना जाता है।

कब मनाया जाता है?

धनतेरस कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन मनाया जाता है इस दिन अर्थात धनतेरस को भगवान धन्वंतरी का जन्म हुआ था इसलिए इस तिथि को **"धनतेरस अथवा धनत्रयोदशी"** के नाम से भी जाना जाता है। भगवान धन्वंतरी के जन्मदिवस होने के कारण भारत सरकार ने इसे **"राष्ट्रीय आयुर्वेदिक दिवस"** के रूप में मान्यता प्रदान की है। भगवान धन्वंतरी आयुर्वेद के जनक माने जाते हैं।

जब असुरों के साथ मिलकर देवताओं ने समुद्र का मंथन किया था उस समय भगवान धन्वंतरी समुद्र में से अमृत कलश और आयुर्वेद हाथ में लेकर प्रकट हुए थे तथा 2 दिन के बाद लक्ष्मी जी समुद्र मंथन से प्रकट हुई थी इसलिए धनतेरस के 2 दिन बाद दीपावली के त्यौहार के दिन माता लक्ष्मी की पूजा अर्चना की जाती है।

धनतेरस कैसे मनाए -

धनतेरस के दिन भगवान कुबेर की पूजा की जाती है। भगवान कुबेर धन दौलत के स्वामी हैं तथा कुबेर जी की कृपा सदा मिलती रहे इसलिए इनकी पूजा-अर्चना की जाती है। धनतेरस एक ऐसा त्यौहार है जिस दिन मृत्यु के देवता यमराज की पूजा भी की जाती है तथा कहीं-कहीं पर धनतेरस के दिन ही दीपावली पूजन के लिए माता लक्ष्मी और गणेश जी की प्रतिमा खरीद कर स्थापित की जाती है।

कुछ मान्यताएं -

- वैसे तो कभी भी किसी की आलोचना बिना कारण नहीं करनी चाहिए लेकिन धनतेरस के दिन इस बात का विशेष ध्यान रखें कि हम किसी से विवाद ना करें किसी की आलोचना ना करें और ना सुने।
- साथ ही प्रातः काल घर में भजनों की ध्वनि

आनी चाहिए भजनों की ध्वनि से घर से नकारात्मक शक्तियां बाहर निकल जाती हैं तथा अपना मन निर्मल एवं स्वस्थ हो जाता है हम सकारात्मक सोचने लगते हैं।

- कुछ विशेष मान्यताएं हैं जो कि लोग मानते हैं धनतेरस के दिन नमक जरूर खरीदना चाहिए, धनतेरस के दिन हम जो नमक खरीद कर लाए उस नमक का प्रयोग दीपावली के पांचों दिनों के त्योहार में प्रयोग करें। एक कटोरी ले और उसमें थोड़ा सा नमक डाले ध्यान रहे कटोरी प्लास्टिक की ना हो चाहे किसी भी धातु की हो तथा उस कटोरी को उत्तर पूर्व की दिशा में रख दें ऐसा करने से सफलता आपके चरण चूमेगी। घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी और वैभव, शांति आएगी।

- अपने दाहिने हाथ के लिए चांदी का एक कड़ा बनाएं तथा दीपावली पर उसका पूजन माता लक्ष्मी के सामने रखकर करें। दीपावली के दूसरे दिन प्रातः उसे दाहिने हाथ में धारण कर ले यदि पूर्व से ही कड़ा बना हो तो उसे साफ कर दीपावली को पूजन कर धारण करें।

ये कार्य अवश्य करे -

धनतेरस के दिन 13 दीपक द्वार पर अवश्य जलाएं। एक दीपक चार बाती वाला बनाएं इसमें एक कोडी और एक सिक्का डाले तथा दाहिने हाथ की तरफ द्वार पर रखें, इसे यम दीपक कहते हैं।

दान करे -

पोटली बनाएं एक मुट्ठी चावल ले और ध्यान रहे चावल टूटे ना हो जितने चावल ले उतनी ही शक्कर ले, आठ लोंग ले, ₹1 का सिक्का माता लक्ष्मी के सामने लाल कपड़ा बिछाए लाल कपड़ा ना हो तो लाल कागज ले, लेकिन यह जमीन पर न रखें किसी थाली में या किसी और अन्य वस्तु पर रखें जो हमारे पास चावल हैं उन चावल का बाई तरफ स्वास्तिक बनाएं तथा उसके ऊपर एक सिक्का रखें दाहिने हाथ की ओर शक्कर से ओम की आकृति बनाएं लाल फूल अर्पित करें तथा दीपावली के बाद इसे किसी मंदिर में पोटली में बांधकर दान करें यदि दूसरे दिन दान ना कर पाए तो 11 में दिन शुक्रवार को यह पोटली दान करें यह प्रक्रिया धनतेरस को शाम के समय अमृत काल में करें।

खरीददारी -

धनतेरस के दिन खरीददारी करना शुभ माना जाता है लेकिन प्रायः देखा जाता है ग्रहणी को जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह वही धनतेरस को खरीद लेती है, यह उचित नही है सोना चांदी और बर्तन खरीदना शुभ होता है।

यह कदापि ना खरीदें -

1) लोहे की बनी वस्तुएं यह नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

2) कांच या कांच से बनी वस्तुएं, कांच का संबंध राहु से होता है और राहु नीच ग्रह में आता है

3) एलमुनियम की बनी वस्तुएं, यह भी अशुभ मानी जाती हैं क्योंकि इससे बनी वस्तुए पूजा में प्रयोग नहीं होती

राशि के अनुसार क्रय करे -

मेष - राशि तांबे की धातु की बनी वस्तुएं खरीदें
वृषभ - चमकदार पॉलिश वाली वस्तुएं या हीरे के आभूषण
मिथुन - काँसे के बर्तन
कर्क - चांदी के बर्तन
सिंह - ताँबे या गोल्डन पॉलिश वाली वस्तुएं
कन्या - काँसे के बर्तन
तुला - बिजली का सामान
वृश्चिक - ताँबे सोने के आभूषण
धनु - पीतल बर्तन सोने के आभूषण
मकर - बिजली का सामान शनि स्वामी है
कुम्भ - मिश्रित धातु के बर्तन
मीन - पीतल, चांदी तथा सोना

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

क्यों मनाया जाता है धनतेरस का त्यौहार ?

पूरा पढ़े - www.

नरक चतुर्दशी हिंदू पंचांग के अनुसार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि (चौदहवें दिन) को मनाई जाती है। यह दीपावली के **पांच दिवसीय महोत्सव का दूसरा दिन होता है। इस दिन को काली चौदस, रूप चौदस, छोटी दीवाली, या नरक निवारण चतुर्दशी के नाम से भी जाना जाता है।**

हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, इस दिन भगवान श्रीकृष्ण, माता सत्यभामा और देवी काली ने असुर नरकासुर का वध किया था और उसके बंदी गृह से 16,100 कन्याओं को मुक्त कर उन्हें सम्मान दिलाया था। इस उपलक्ष्य में दीयों की बारात सजाई जाती है, और इसे नरक से मुक्ति दिलाने वाला त्योहार कहा जाता है। मान्यता है कि **कार्तिक मास की इस चतुर्दशी तिथि पर अपामार्ग (चिचड़ी के पौधे) की पत्तियों को जल में डालकर तेल से स्नान करने और पूजा-अर्चना करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।** लोग अपने घर के मुख्य द्वार के बाहर **यमराज के नाम का चौमुखा दीपक जलाते हैं, ताकि अकाल मृत्यु से बचा जा सके।**

रूप चतुर्दशी क्यों कहा जाता है?

नरक चतुर्दशी को रूप चौदस इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस दिन विशेष रूप से शरीर की सुंदरता और स्वास्थ्य के लिए स्नान एवं सौंदर्य संबंधी विधियों का पालन किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन सूर्योदय से पहले उबटन और स्नान करने से रूप-लावण्य में वृद्धि होती है। इस दिन शरीर को सुंदर और स्वस्थ बनाए रखने के लिए विशेष उबटन का प्रयोग किया जाता है, जिससे शारीरिक सौंदर्य और तेज बढ़ता है।

त्योहार की आधुनिक प्रासंगिकता

नरक चतुर्दशी एक संदेश देती है कि हमें अपने जीवन में भी अज्ञानता, अहंकार और अन्य नकारात्मक भावनाओं को समाप्त करना चाहिए, जैसे श्रीकृष्ण ने नरकासुर का अंत किया था। यह त्योहार आत्म-शुद्धि, परिवार में समृद्धि और समाज में बुराई के खात्मे का प्रतीक है। **दीपों की रौशनी से घर और जीवन को उज्जवल बनाने का यह पर्व जीवन में नई ऊर्जा और सकारात्मकता लाने का अवसर प्रदान करता है।**

पूरा पढ़े - www.

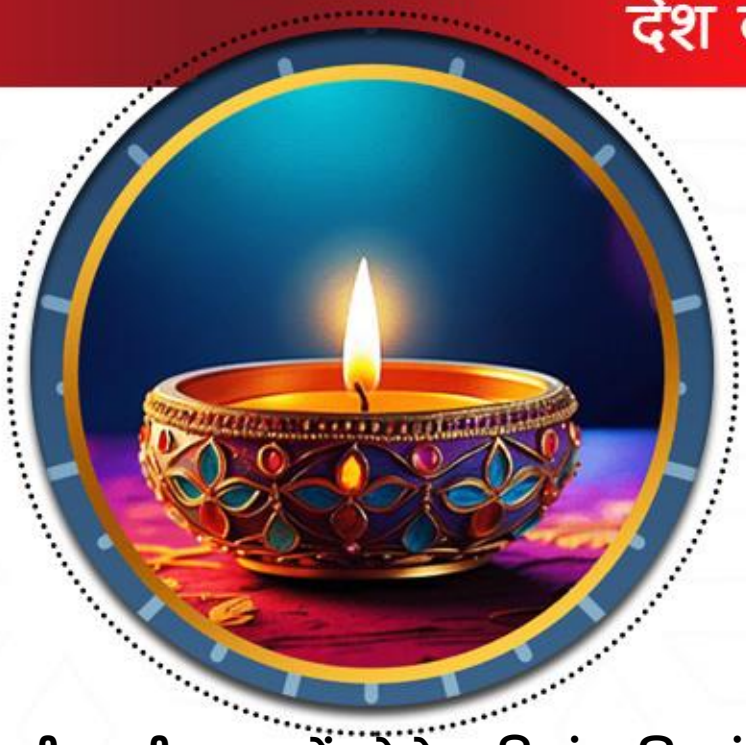

दीपावली पर बच्चों को देश की संस्कृति एवं परंपरा से जोड़ें

दीपावली भारत का सबसे बड़ा त्यौहार है। यह हमारी अनूठी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह त्यौहार है - **अंधकार पर प्रकाश की विजय, अज्ञान पर ज्ञान की विजय और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक एवं हर्षोल्लास से उत्सव मनाने का अवसर।**

दीपावली पंचदिवसीय पर्व के रूप में प्रार्थना, दावतों, पारिवारिक समारोहों, आतिशबाजी और धर्मार्थ दान - स्नान के अनुष्ठान से संपन्न होती है।

दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को मनाई जाती है।

बच्चों को दीपावली की पौराणिक कहानी सुनाएं –

दीवाली हिन्दुओं के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक त्यौहार है। इस दिन भगवान राम 14 वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे। उन्होंने राक्षस रावण का वध किया था, उसी की प्रसन्नता में भगवान राम का दीये जलाकर और प्रकाश करके स्वागत किया गया था। इसी दिन वामन अवतार भगवान ने दैत्यराज बलि से तीनों लोकों का राज्य प्राप्त किया था।

बच्चों को बाजार साथ ले जाएं –

दीपावली की खरीदारी करने के लिए अकेले न जाकर, बच्चों को भी साथ ले जाएं। इससे बच्चों को वहाँ जाकर अच्छा लगेगा और बहुत सी नई जानकारियां भी प्राप्त कर सकेंगे। खील - बताशे, कपड़े, दीये, लाइट्स, मिठाइयाँ और पटाखे आदि उन्हीं से पूछकर खरीदें, तो वे इसमें अधिक सम्मिलित होंगे।

दीवाली के बहाने हम जुड़ते हैं दीयों के साथ, जिसका भारतीय परंपरा से गहरा संबंध है। यद्यपि दीपों का प्रयोग बहुत कम हो गया है, **फिर भी कुम्हार द्वारा बनाए गए मिट्टी के दीयों को जलाकर घर को प्रकाशित करने का उत्साह ही अलग होता है।** बच्चे खील - बताशे, बांस और लकड़ी की बनी डोलचियाँ, फूलडालियाँ, मिट्टी की गुल्लक आदि अवश्य खरीदें। दीवाली के अवसर पर ऐसी चीजें सड़क किनारे फुटपाथ पर बिकती हैं। इससे बच्चे ग्रामीणों या पुराने हस्तशिल्पियों की कला से परिचित होंगे और उनसे जुड़ाव बढ़ेगा।

त्यौहार से जुड़ी एक - एक गतिविधि में सम्मिलित करें -

दीपावली में घर की साफ-सफाई तथा सजाने से लेकर शाम की आरती तक में अपने बच्चों को सम्मिलित करें। मंदिर की सफाई और सजावट का काम उन्हें सौंपें। आवश्यक निर्देश आप उन्हें दे सकते हैं। शाम को आरती में उन्हें सबसे आगे करें और जब दीया जलाएँ तो उन्हें दीया सजाने के लिए कहें। पूजन में ध्वनि का विशेष महत्व है। शंख और घंटानाद न केवल देवों को प्रिय है, अपितु इसकी ध्वनि से बैक्टीरिया नष्ट होते हैं, वातावरण शुद्ध होता है और घर - परिवार को नकारात्मकता ऊर्जा से बचाते हैं। बच्चों को शंख बजाने का अभ्यास करवाना चाहिए। उन्हें माँ लक्ष्मी और गणेश से जुड़ी कहानियों को इस त्यौहार पर सुना सकते हैं और उनकी समझ तथा उनके मन में उठने वाले अनेक प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। इससे बच्चों की ऊर्जा बढ़ेगी और उनमें खोजी गुणों का विकास होगा। दीया सजाना, रंगोली बनाना, घर की सजावट के सामान तैयार करने में भी उनकी सहायता लें और उनके कार्यों की प्रशंसा अवश्य करें।

पारंपरिक परिधान पहनाएं -

भारतीय परंपरा का सही अर्थ बच्चे तभी समझ सकेंगे, जब बड़े स्वयं परंपरा का पालन करें। त्यौहार के अवसर पारंपरिक परिधान ही धारण करें तथा बच्चों को भी उसी प्रकार तैयार करें। बेटे कुर्ता-पायजामा और बिटिया सुंदर सा लहंगा चोली पहनें।

बच्चों के साथ त्यौहार मनाएँ -

कोई भी त्यौहार बच्चों या परिवार के बिना अधूरा है। अपने बच्चों के साथ हँसते-खेलते मनाएं, इससे त्यौहार का आनंद कई गुणा बढ़ जाएगा।

दीपावली में भेंट -उपहारों की खरीदारी करें -

दीपावली का त्यौहार प्रकृति के प्रति ढेरों संदेश लिये होता है। ऐसे में हमें बच्चों को अपनी खुशियों से पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाने की सीख देनी चाहिए तथा उन्हें ईको - फ्रेंडली दीवाली मनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाते हुए वे जूट या कपड़े का थैला लेकर बाजार जाएं। प्लास्टिक बैग प्रयोग करने से रोकें। भेंट में ऐसी चीजें देने के लिए चुनें, जो प्रकृति को सहेजने में सहायता करे, जैसे घर के अंदर रखे जाने वाले पौधे, आर्गेनिक चाय, पिगी बैंक, मसाले, पुस्तकें, हस्तशिल्प की बनी सजावटी वस्तुएं आदि। इन उपहारों से बच्चे त्यौहारों से जुड़ाव महसूस कर पाएंगे और त्यौहार उनके लिए मजे के दिन ही नहीं, अपितु वे उससे जीवन के लिए अच्छी सीख ले पाएंगे। बच्चों को किसी गरीब या निराश्रित बच्चे को मोमबत्ती, दीया, मिठाई या कोई उपहार आदि देने के लिए भी प्रेरित करें। **इससे वे गरीब बच्चे के मुख पर मुस्कान देखकर सार्थक महसूस करेंगे।**

ग्रीन पटाखों से मनाएं स्वच्छ दीवाली -

पटाखे दीपावली का हिस्सा नहीं हैं, फिर भी बच्चे से बड़े तक दीपावली के अवसर पर पटाखे अवश्य फोड़ते हैं। कुछ पटाखे बहुत तेज आवाज के होते हैं, जो छोटे बच्चों की सुनने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। पटाखों से निकलने वाला हानिकारक धुआँ बुजुर्ग, छोटे बच्चे तथा पालतू पशुओं को सांस लेने में कठिनाई पैदा कर सकता है। प्रतिवर्ष दीवाली पर बढ़ता वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण चिंता का विषय बन गया है। प्रायः पटाखों से चोट लगने की संभावना बनी रहती है। इसलिए इस दीवाली पर प्रण लें कि शोर वाले पटाखों से दूर रहेंगे। बच्चों के लिए केमिकल वाले पटाखों की जगह ईको - फ्रैंडली पटाखे लाएं। ग्रीन पटाखे दिखने, जलाने और आवाज में सामान्य पटाखों की तरह ही होते हैं, लेकिन प्रदूषण कम होता है और ध्वनि प्रदूषण भी कम करते हैं। ग्रीन पटाखों की पैकिंग के ऊपर अलग से होलोग्राम या लेबल को देखकर यह पता चल जाता है। पटाखे छुड़ाते समय बच्चों के साथ किसी बड़े का होना आवश्यक है। अतः ग्रीन पटाखों से सुरक्षित एवं स्वच्छ दीवाली मनाएं, पवित्र - पावन मन से देवी लक्ष्मी और श्रीगणेश का पूजन करें।

सभी को दीपावली की अमित मंगलमय कामनाएँ।

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', आदिलनगर, विकासनगर (लखनऊ)

यदि आप भारतीय परम्परा
की पत्रिका और वेबसाइट पर विज्ञापन देना चाहते हैं, तो हमसे संपर्क करें।

पत्रिका में आधा पेज और पूरा पेज विज्ञापन उपलब्ध है।
वेबसाइट पर 2 प्रकार के बैनर उपलब्ध हैं, जिन्हें 3 स्थानों पर देखा जा सकता है।

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
शुभ
दीपावली
www.bhartiyaparampara.com